आज का पुरुषार्थ 13 April 2022

Source: BK Suraj bhai   **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" मैं बहुत मीठा हूँ .. मैं अन्तर्मुखी हूँ .. मैं बाप समान हूँ " ... आज से इस पुरूषार्थ में जुट जाये "*

हम सभी संसार में बड़े से बड़े मनुष्य है। सृष्टि के आदि मनुष्य, पू**र्वज मनुष्य आत्मायें**। तो हमें बहुत कम बोलना चाहिए। जो royal लोग होते है वो बहुत ज्यादा नहीं बोलते। हम भी बहुत royal है।

बोल इस संसार में बहुत **महत्वपूर्ण** होते है। किसी के बोल **महावाक्य** कहलाते है। किसी के बोल **वरदान** बन जाते है। किसी के बोल **सुखदाई** हो जाते है। तो किसी के बोल मूर्च्छित को सुरजीत कर देते है।

तो सोचे हमारे बोल कैसे है? हम कैसे बोलते है? हम ऐसे तो नहीं बोलते कि किसी के जीवन में निराशा आ जाये? हम ऐसे तो नहीं बोलते कि दुसरों के दिल दुःखने लगे?

कईयों के बोल सचमुच बहुत कड़ुवे होते है। दुनिया में कोई ऐसे होते कि दुसरों के ग्लानि करते ही रहते है। चाहे अपने परिवार प्रति ही क्यों ना हो। पीछे ही पड़े रहते है ....

हमें याद रखना चाहिए ...

" जैसे बोल हम दूसरों को बोलेंगे वैसे ही बोल हमें कभी न कभी सुनने पड़ेंगे "

अब तो हम भगवान के बच्चे है। हम अपने ही कानों से भगवान के वाणी सुनते है। इस मुख से सबको भगवान का संदेश देते है। तो जिस मुख से **भगवान का संदेश** देते है उस मुख से हमें किसी की भी ग्लानि नहीं करनी है।...

यह बहुत सुन्दर धारणा यदि हम अपना ले कि ....

" **हमारे बोल दुसरों को सुख देने वाला हो** .. उनके पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने वाले हो .. उनके जीवन में नई राहें दिखाने वाले हो .. हमारे बोल सबको हल्का कर दे .. भारी आत्मायें हमारे पास आये लेकिन हल्के होकर जायें "

तो बोल पर बहुत ध्यान देना है। हम संकल्प करें ....

" **आज से हम अच्छे बोल बोलेंगे** .. ताकि हमारे बोल सुनने के लिए लोग लालायित रहे .. हमारे बोल भी दुसरों के लिए महावाक्य बन जाये .. हमारे बोल टेप रिकार्ड करने वाला बन जाये .. हमारे बोल किसी को नये जीवन देने वाले बन जाये "

कोई जीवन से निराश होकर मरने की सोच रहा हो, और हमारे बोल सुनकर उसमें **जीने का उमंग आ जाये।** ऐसे बोल हमारे हो। इससे सभी लोग हमारे समीप आने लगेंगे। और हमारे समीप आयेंगे तो बाबा के समीप भी आयेंगे। बाबा के लिए उनका प्यार बढ़ेगा।

और जो **अन्तर्मुखी** होते है, बाबा कहते है ....

" जहाँ पचास बोल से काम चलता हो वहाँ पाँच बोल से काम चलाये "

जिन्हें लम्बे समय तक ऐसा **अन्तर्मुखता** का अभ्यास होता है उन्हें वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है। अर्थात जो कुछ बोले वहीं सत्य हो जाये। ऐसी वाक् सिद्धि दुसरों के लिए कल्याणकारी होता है।

इतना ही नहीं इस सिद्धि के रहते जिसे भी हम ज्ञान देंगे उसे सीधा तीर लगेगा। और वो बाबा के बन जायेंगे।

और आज सारा दिन प्रैक्टिस करेंगे ....

" हम सूक्ष्म लोक में है ..सामने ब्रह्मा बाबा उनके सम्पूर्ण स्वरुप में खड़े है .. उनके अंग अंग से किरणें फैल रही है .. उनके मस्तक के पीछे बहुत सुन्दर गोल्डेन का ताज .. होठों पर मुस्कान लेकर बाबा खड़े है "

" और उनके सामने हम है .. अचानक ही परमधाम से **शिवबाबा की किरणें हम पर पढ़ने लगी .. और हमारी चमक बढ़ने लगी** .. ऊपर से लगातर किरणें आ रही है .. और हमारी चमक धीरे-धीरे बाबा जैसी हो गई "

" मैं बाप समान फरिश्ता हूँ "

यह अभ्यास दिन में कई बार करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।